सोवा रिगपा (आमची) अनुसंधान केन्द्र, लेह

केन्द्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद्
आयुष मंत्रालय
(आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध एवं होम्योपैथी)
भारत सरकार

परिचय

सोवा रिगपा (आमची) अनुसंधान केन्द्र–लेह, केन्द्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद, आयुष विभाग, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार की एक परिसरीय इकाई है। इस केन्द्र की स्थापना लेह लद्दाख में सन् 1976 में हिमालय चिकित्सा पद्धति "सोवा रिगपा" जिसे तिब्बती या आमची औषधि के रूप में जाना जाता है। स्थापना के समय से ही यह अनुसंधान केन्द्र सीमित संसधानों से सोवा–रिगपा के अनुसंधान एवं विकास में महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है।

मुख्य लक्ष्य एवं उद्देश्य

- आमची चिकित्सा पद्धति का मौलिक अनुसंधान एवं औषधि योगों द्वारा आतुरीय अनुसंधान का कार्य करना।
- लद्दाख–हिमालय क्षेत्र के वानस्पतिक एवं खनिज संसाधनों का अन्वेषण एवं प्रलेखन करना।
- सोवा–रिगपा की सम्पन्न साहित्य सम्पदा का अनुसंधान करना।
- आमची पद्धति के अभ्यास को सुदृढ़ एवं विकसित करना।
- स्थानिक जनता की चिकित्सा सेवा करना।

गतिविधियाँ एवं उपलब्धियाँ

अ–आतुरीय अनुसंधानः– इस योजना के अन्तर्गत आमची औषधि योगों द्वारा विभिन्न रोगों पर वैज्ञानिक ढंग से आतुरीय अनुसंधान किया गया है। अधिकांश रोगों में आमची औषधि बहुत प्रभावकारी सिद्ध हुई। कुछ मुख्य रोग जिन पर अध्ययन किया गया वे निम्न हैः–

- पड़कन–मुगपो (पेप्टिक अल्सर–आमाशयिक/आंत्रिक व्रण)
- टेक–डम (संधिशोथ)
- पग्स–नड़ (चर्मरोग)
- थगलंग–स्टोड तसांग (उच्च रक्तचाप)

ब–वानस्पतिक एवं खनिज अन्वेषण

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत सोवा रिगपा अनुसंधान केन्द्र द्वारा लद्दाख एवं लाहौल स्पिति क्षेत्र का व्यापक औषधियों में उपयुक्त– वानस्पतिक सर्वेक्षण किया गया। इस सर्वेक्षण में कुल 1000 औषधि पादप प्रजातियों का संग्रह किया गया जिनमें से 500 प्रजातियों का विभिन्न भारतीय चिकित्या पद्धतियों में प्रयोग किया जाता है। आमची पद्धति में प्रयुक्त औषधि पादपों को शोध पत्रों के रूप में प्रलेखित किया गया है तथा ट्रांस–हिमालय औषधि पादपों पर एक सूची पुस्तक का प्रकाशन किया गया है। लद्दाख के विभिन्न स्थानों से लगभग पचास विभिन्न खनिज पत्थर संग्रहित किए गए हैं।

स–साहित्यक अनुसंधान परियोजना

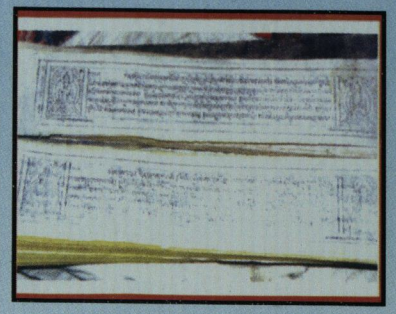

सोवा–रिगपा की सम्पन्न साहित्य सम्पदा तिब्बती भाषा में है, जिसमें बड़ी संख्या में अनुवादित भारतीय शास्त्रीय चिकित्या साहित्य एवं उनकी व्याख्याएं सम्मिलित है, जो भारतीय एवं तिब्बती विद्वानों द्वारा लिखी गई हैं। लद्दाख में प्राचीन साहित्य के स्त्रोत की सूची एवं संख्या का अभिनिर्धारण किया गया है। भारतीय चिकित्सा साहित्य में अनुवादित तिब्बती पाण्डुलिपियों की संदर्भ ग्रन्थ सूची भी तैयार की गई है।

द–विस्तृत गतिविधियाँ

सोवा–रिगपा अनुसंधान केन्द्र लेह द्वारा लद्दाख में आमची पद्धति को सुदृढ़ एवं विकसित करने हेतु विभिन्न पुनर्विन्यास प्रशिक्षण, संगोष्ठी एवं कार्यशालाओं का आयोजन किया गया है। इन कार्यक्रमों द्वारा इस केन्द्र के अनुसंधान निष्कर्ष एवं पारम्परिक औषधि तथा औषधि पादपों के क्षेत्र में नए विकास आमची पद्धति के लोगों को संप्रेषित किए गए हैं।

इ–औषधि पादपों की कृषि एवं संरक्षण

विश्व की सभी जड़ी–बूटी आधारित चिकित्सा पद्धति के बने रहने हेतु औषधि पादपों की उपलब्धता महत्वपूर्ण है। वर्तमान में जड़ी बूटी आधारित उत्पादों की मांग में वृद्धि पारिस्थितिकी परिवर्तन, अवैज्ञानिक एवं अत्यधिक उपयोग आदि के कारण अनेक पादप प्रजातियों के अस्तित्व में भयंकर आपदा उत्पन्न हो गई है। इस परिस्थिति से बचने के लिए हिमालय क्षेत्र में सेवा–रिगपा अनुसंधान केन्द्र लेह लद्दाख क्षेत्र के कुछ महत्वपूर्ण एवं अपदाग्रस्त औषधि पादपों की कृषि एवं संरक्षण हेतु कार्यरत है। औषधि पादपों के कृषिकरण हेतु इस केन्द्र द्वारा कतिपय ग्रामीण आमची (पारम्परिक चिकित्सक) को नियोजित किया गया है। शीत मरुस्थलीय पादपों के संरक्षण एवं प्रदर्शन के उद्देश्य से इस केन्द्र द्वारा ट्रांस हिमालयन औषधीय पादप उद्यान की स्थापना प्रारम्भ की गई है।